किस्सा पोटली वाला

लॉकडाउन के बाद जब स्कूल खुले तो पोटली की किताबों ने बच्चों को फिर से पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया से जोड़ने की भूमिका उठा ली है। बच्चे कहानियों के जरिये भूली हुई दक्षताओं की ओर कदम बढ़ा रहे हैं।

– उषा पन्त

पोटली की पुस्तकों को बच्चों के सामने खोलने से पहले बच्चों से पोटली पर बात की। बच्चों से पूछा कि पोटली क्या है? पोटली से वे क्या समझते हैं? इस पोटली में क्या होगा? बच्चों के विचार इस तरह थे–

- इसमें खाने का सामान होगा
- कुछ बच्चे कह रहे थे कोई जादू होगा
- कुछ बच्चों ने कहा कि कपड़े होंगे

हर बच्चे का अपने–अपने हिसाब से पोटली पर खयाल था। इसको लेकर उनकी कुछ न कुछ समझ हर बच्चे की थी। इसके बाद पोटली खोली गई और उसमें कहानी की किताबें निकलीं। बच्चे कहने लगे कि हम समझ गये थे कि मैडम की पोटली है तभी तो किताबें निकलीं।

इसके बाद सभी बच्चों को बुलाया और उनके सामने सभी किताबें फैला दीं। उनसे, उनकी पसंद की किताब उठाने को कहा। बाल साहित्य तो हमारे विद्यालयों में भी होता है लेकिन पोटली की पुस्तकें काफी आकर्षक हैं। बच्चे पुस्तकों को बहुत उत्सुकता से उलट–पुलट रहे थे। बच्चे प्रत्येक पुस्तक को देखना चाह रहे थे। मैंने बच्चों से कहा कि एक बच्चा एक पुस्तक ले जा सकता है। उसको पढ़ो फिर दूसरी ले जा सकते हो।

इसके बाद सभी बच्चों ने अपनी पसंद की पुस्तक ले ली और उसको पढ़ने लगे। बच्चे बिलकुल शांत होकर पढ़ रहे थे। इसके बाद बच्चों के साथ पढ़ने की घंटी तय की। विद्यालय में दिन का एक वक्त पढ़ने के लिए निश्चित किया गया। प्रतिदिन बच्चे खुद ही अपनी पसंद की पुस्तक ले लेते और पढ़ते। बड़े बच्चे छोटे बच्चों को भी पढ़कर सुनाते। यह क्रम चलता रहा। अब बच्चे पढ़ी हुई कहानियों पर बात करने लगे थे। अपनी कहानी को सुबह की सभा में सुनाने लगे थे। खुद की जिन्दगी से भी कहानी को जोड़ पा रहे थे। जैसे यदि कोई कहानी जानवर के विषय में थी तो उसे वे अपने घर के जानवरों से जोड़कर देख पा रहे थे।

इस तरह बहुत मजेदार अनुभव रहे। पोटली की ये कहानियां हर आयु वर्ग के बच्चों के लिए हैं। छोटे बच्चों

कशिश तोमर, कक्षा–5, राजकीय प्राथमिक विद्यालय भोजावाला, विकासनगर देहरादून

के लिए चित्र आधारित कहानियां हैं। इसके बाद एक–एक वाक्य और ज्यादा चित्र वाली। इसी क्रम में फिर लम्बी कहानियां। बच्चों की समझ के अनुसार हैं ये बाल कहानियां। पोटली में समाहित किस्से कहानियों वाली ये पुस्तकें बच्चों के लिए एक अलग ही उत्सुकता और कल्पनाशीलता का निर्माण करती हैं। बच्चों के मतलब की कई कहानियां हैं जो उनके लिए एक पूरा संसार रचती हैं। एक ओर अरब देश की कहानियां वहां की वेशभूषा और उनके कार्यों का वर्णन है तो दूसरी ओर अंडमान के बारे में ये कथाएं हमको बतलाती हैं। कुल मिलाकर बच्चों को इनको पढ़ने और सुनाने में बहुत मजा आया। दूसरी तरफ बिल्ली के बच्चे जैसी बड़ी किताबें जिनमें चित्रों की अधिकता जिसमें बच्चे खुद आकर्षित होते हैं।

पोटली से पहले भी बच्चे लिखते–पढ़ते थे लेकिन पोटली के दौरान उनमें पढ़ने की ललक पैदा हुई। पढ़ने को लेकर और उसकी अभिव्यक्ति को लेकर वे जागरूक हुए। बड़े बच्चों का छोटे बच्चों को कहानी सुनाना बड़ा ही रोचक था। छोटे बच्चों के साथ चित्र कहानी पर बात करने से वे भी किताबों की ओर आये। लॉकडाउन के बाद जब स्कूल खुले तो पोटली की इन किताबों ने बच्चों को फिर से पढ़ने–लिखने की प्रक्रिया से जोड़ने की भूमिका उठा ली है। बच्चे कहानियों के जरिये भूली हुई दक्षताओं की ओर कदम बढ़ा रहे हैं।

लेखिका राजकीय प्राथमिक विद्यालय मौना नावली, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड में शिक्षिका के पद पर है।